SHRI CHAITRAM DEOCHAND PAWAR

Shri Chaitram Devchand Pawar is an eminent social worker from Maharashtra who is known for his works for the tribal welfare and environment protection.

2. Born on 1st June, 1967 in Baripada Distt of Sakri Tehsil of Maharashtra, Shri Pawar received his master's degree in Commerce from University of Pune in 1993. He belongs to tribal background and has worked with forest dwelling tribes since last 30 years on various issues such as tribal development, empowerment, self reliance, forest rights, conservation of natural resources, agriculture and sustainable development etc.

3. Shri Pawar started working from his village with the help of Vanavasi Kalyan Ashram, which has now been extended to 100 villages in Maharashtra and Gujarat. He is working as President of Vanavasi Kalyan Ashram and also networked with various NGOs working in tribal area to pool their knowledge for empowering the emerging tribal youth leaders. Modules from this model of leadership development in tribal villages have been taken up by other organizations working with tribals in Western Ghats.

4. Shri Pawar undertook various activities for the development of tribal persons. Tribal life and culture is dependent on Jal, Jungle and Jameen. He tried to stop cutting of forest in his village and took forest conservation and development to a new level. He started water conservation efforts with community participation. He started community based water shed development initiatives like loose boulder bunds, CCT etc. He began with cultivation of 5000 trees with his own contribution. He leveraged existing Government schemes towards forest and water conservation. Due to his efforts and community support, a dense forest on 445 hectares has been developed. The water conservation effort has resulted in providing protective irrigation to atleast 500 acres and irrigation system for Rabi crops in 250 acres. Recognizing his efforts for environment protection, he was appointed as an Expert Member of Forest Advisory Committee of Department of Environment and Forest of Government of India in 2015.

5. Shri Pawar's initiatives resulted in increase farm and forest income of tribal people improving their socio economic status. He also worked for curbing mal-nutrition, adoption of small family norms, Primary education, girls education and women involvement in decision making. He encouraged used of chlorinated water, regular use of toilet and soak pit, use of improved chulhas, solar cooker etc.

6. Shri Pawar's contributions have been honored with many awards. He was awarded Biodiversity Award in 2014 by UNDP. Maharashtra Government conferred upon him Shetinisht Shetkari Puraskar in 2013, Adivasi Sevak Puraskar in 2014 and Maharashtra Vanbhushan Puraskar in 2024. He was also honored with several other awards such as Sant Tukaram Vangram Puraskar, Vasant Rao Naik Samaik Puraskar etc.

श्री चैत्राम देवचँद पवार

श्री चैत्राम देवचँद पवार महाराष्ट्र के प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता हैं जो आदिवासी कल्याण और पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने कार्यों के लिए जाने जाते हैं।

2. 1 जून, 1967 को महाराष्ट्र के साकरी तहसील के बारीपदा जिले में जन्मे, श्री पवार ने वर्ष 1993 में पुणे विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। वह आदिवासी पृष्ठभूमि से हैं और पिछले 30 वर्षों से वनवासी जनजातियों के साथ आदिवासी विकास, सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता, वन अधिकार, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, कृषि और सतत विकास आदि जैसे विभिन्न मुद्दों पर कार्य कर रहे हैं।

3. श्री पवार ने वनवासी कल्याण आश्रम की मदद से अपने गांव से काम करना शुरू किया जो अब महाराष्ट्र और गुजरात के 100 गांवों तक फैल चुका है। वह वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे है और उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों में काम करने वाले विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के साथ नेटवर्क बनाकर उनके ज्ञान को उभरते आदिवासी युवा नेताओं को सशक्त बनाने के लिए साझा किया। आदिवासी गांवों में नेतृत्व विकास के इस मॉडल के मॉड्यूल को पश्चिमी घाट में आदिवासियों के साथ काम करने वाले अन्य संगठनों ने भी अपनाया है ।

4. श्री पवार ने जनजातीय व्यक्तियों के विकास के लिए विभिन्न गतिविधियां चलाई। जनजातीय जीवन और संस्कृति जल, जंगल और ज़मीन पर निर्भर है । उन्होंने अपने गाँव में वनों की कटाई को रोकने का प्रयास किया और वन संरक्षण और विकास को एक नए स्तर पर ले गए। उन्होंने सामुदायिक भागीदारी के साथ जल संरक्षण के प्रयास शुरू किए। उन्होंने लूज़ बोल्डर बंड, सीसीटी आदि जैसी समुदाय आधारित वाटर शेड विकास पहल शुरू की। उन्होंने अपने योगदान से 5000 पेड़ों की खेती से शुरुआत की। उन्होंने वन और जल संरक्षण के लिए मौजूदा सरकारी योजनाओं का लाभ उठाया। उनके प्रयासों और सामुदायिक समर्थन के कारण, 445 हेक्टेयर भूमि में घना जंगल विकसित किया गया है। जल संरक्षण प्रयास के परिणामस्वरूप कम से कम 500 एकड़ में सुरक्षात्मक सिंचाई और 250 एकड़ में रबी फसलों के लिए सिंचाई प्रणाली प्रदान की गई है। पर्यावरण संरक्षण के लिए उनके प्रयासों को मान्यता देते हुए, उन्हें वर्ष 2015 में भारत सरकार के पर्यावरण और वन विभाग की वन सलाहकार समिति के विशेषज्ञ सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया था।

5. श्री पवार की पहलों के परिणामस्वरूप आदिवासी लोगों की कृषि और वन आय में वृद्धि हुई और उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। उन्होंने कुपोषण को रोकने, छोटे परिवार के नमूने को अपनाने, प्राथमिक शिक्षा, लड़कियों की शिक्षा और निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी के लिए भी काम किया। उन्होंने क्लोरीनयुक्त पानी के उपयोग, शौचालय और सोखने वाले गड्ढे के नियमित उपयोग, उन्नत चूल्हों, सौर कुकर आदि के उपयोग को प्रोत्साहित किया।

6. श्री पवार के योगदान को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें वर्ष 2014 में यूएनडीपी द्वारा जैव विविधता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें वर्ष 2013 में शेटिनिष्ट शेतकारी पुरस्कार, वर्ष 2014 में आदिवासी सेवक पुरस्कार और वर्ष 2024 में महाराष्ट्र वनभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें संत तुकाराम वनग्राम पुरस्कार, वसंत राव नाइक समैक पुरस्कार आदि जैसे कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।